Vol. 1, No. 1 (October 2012) P. 1-3 Sangeet Galaxy
ISSN : 2319-9695

कुछ मेरे अंतर्मन की.....

18वीं से 20वीं सदी के दौरान गुजरे जमाने में जब गुरू शिष्य परम्परा पर आधारित घरानेदार शिक्षण का कोई दूसरा विकल्प नहीं था, तब ये माना जाता रहा कि संगीत एक प्रदर्शनकारी कला है और इसकी शिक्षा में शास्त्रीय अध्ययन और वैज्ञानिक विवेचन की आवश्यकता नही है। संगीत तो सीना–ब–सीना तालीम की चीज है, लेकिन 20वीं सदीं आते–आते समय और सोच दोनों ने करवट ली। संगीत के कुछ बुद्धिजीवियों को संगीत की संस्थागत शिक्षण की जरुरत महसूस होने लगी, फलस्वरूप संगीत की संस्थाओं की स्थापना के प्रयास आरम्भ हो गये। कालान्तर में संगीत की संस्थायें स्थापित हुई। संगीत शिक्षण की नीतियां बनी। पाठ्यक्रम निर्धारित किये गये और किताबें लिखी जाने लगी। संगीत को सुरक्षित और संरक्षित रखने के लिहाज से संगीत लिपियां प्रकाश में आई। जो संगीत अब तक परम्परागत तरीके से मौखिक रूप से प्राप्त होता था अब लिपिबद्ध होने लगा था। इसी क्रम में संगीत पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरूआत हुई। पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी ने स्वयं सन् 1905 में लाहौर से 'संगीतामृत प्रवाह' नामक संगीत पत्रिका प्रकाशित की थी। स्पष्ट है कि स्वतंत्रतापूर्व काल में ही संगीत लेखन के क्षेत्र में जागरूकता आ गई थी, जिसके फलस्वरूप कुछ संगीत पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हो गया था।

संगीत के क्षेत्र की संबसे लोकप्रिय पत्रिकायें हाथरस, उ0प्र0 से प्रकाशित 'संगीत' का प्रकाशन सन् 1935 से तथा अखिल भारतीय गांधर्व मण्डल, मुम्बई द्वारा प्रकाशित 'संगीत कला विहार' का प्रकाशन सन् 1948 से आरम्भ हो गया था जो कि वर्तमान में भी अबाध रूप से प्रकाशित होती आ रही है। इन पत्रिकाओं ने संगीत के प्रचार–प्रसार व उन्नयन में जो भूमिका निभाई है, वह अतुलनीय है। ये पत्रिकाऐं अपने आप में मिसाल भी हैं और मिसाइल भी। इसके अतिरिक्त समय–समय पर कई संगीत पत्रिकायें प्रकाश मे आती रही लेकिन वो जुगनू की तरह रोशनी बिखेर कर थोड़े समय में अलविदा कह गई। संगीत की इन पत्रिकाओं ने आम–अवाम को एक सुनहरा मौका दिया, संगीत की उन शास्त्रीय बातों, उन परम्परागत नियमों व उन रहस्यों को समझने का, जो अब तक घरानों की मजबूत दीवारों में महफूज थी और आम–अवाम के लिए नही थी। संगीत की पत्रिकाओं ने संगीतकारों, संगीत लेखकों व संगीत प्रेमियों के लिए एक बौद्धिक एवं स्वतंत्र मंच के रूप में कार्य किया जिस पर अभिव्यक्ति, आलोचना व समीक्षा का समान अधिकार मिला। संगीत पत्रिकाओं के माध्यम से एक ओर संगीत के सैद्धांतिक पक्ष के साथ–साथ संगीत के क्रियात्मक पक्ष की जानकारी से संगीत समाज लाभान्वित हुआ तो दूसरी ओर संगीत के विभिन्न मुद्दों पर व्याप्त भ्रामक धारणाओं, विसंगतियों व त्रुटियों से संगीत समाज को अवगत कर उसके निराकरण के सुझाव प्रस्तुत किये गये। संगीत पत्रिकाओं में विभिन्न विद्वानों का संगीत संबंधी मौलिक चिंतन प्रकाशित हुआ तो संगीत के क्षेत्र में हुए नवीन अनुसंधानों की

जानकारी भी प्राप्त हुई। ख्याति प्राप्त संगीतकारों व विद्वानों के साक्षात्कारों के प्रकाशन के साथ–साथ संगीत जगत की समसामयिक सांगीतिक गतिविधियों की जानकारी भी संगीत पत्रिकाओं के माध्यम से जन–जन तक पहुॅची।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्रता के पूर्वाद्ध व उत्तरार्द्ध में प्रिंट मीडिया के अन्तर्गत पत्रिका के माध्यम से संगीत के प्रचार–प्रसार में बड़ी सहायता मिली। उसके बाद ब्राडकास्टिंग मीडिया के अन्तर्गत टेलीविजन व आकाशवाणी ने संगीत को उसके प्रदर्शनकारी रूप में घर–घर तक पहुॅचा दिया। आज का समय प्रिंट मीडिया, ब्राडकास्टिंग मीडिया व इलेक्ट्रानिक मीडिया के साथ–साथ साइबर मीडिया का है। शिक्षा के क्षेत्र में साइबर मीडिया के प्रवेश के बाद उसके स्वरूप में अमूल–चूल परिवर्तन हुए है। शिक्षा के क्षेत्र में साइबर मीडिया का प्रवेश शिक्षा की परम्परागत पद्धति के एक नये विकल्प के रूप में सामने आया है। इस प्रगतिशील और आधुनिक विकल्प ने सूचनाओं और ज्ञान को जन–जन तक सरल व सुविधाजनक तरीके से पहुॅचा दिया है। CD, DVD, Pan Drive, Online Teaching, E-Magazine, E-Books और E-Journals ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। वैज्ञानिक विवेचन व विश्लेषण के लिए शोध पत्रिका या Journals सूचना के प्रमाणिक स्रोत माने जाते हैं। Print Journals और E-Journals की तुलना करें तो E-Journals Print Journals की तुलना में एक समय में एक साथ एक बड़े पाठक वर्ग तक पहुॅच सकते हैं। Print Journals की तुलना में E-Journals के प्रकाशन में बहुत कम समय, श्रम और धन का व्यय होता है। स्पष्ट है कि E-Journals या Online Journal आज की आवश्यकता है।

संगीत से संबंधित बहुत से Online Journal इन्टरनेट पर उपलब्ध हैं लेकिन इनमें से अधिकांश पाश्चात्य देशों से प्रकाशित हैं और पाश्चात्य संगीत पर केन्द्रित हैं। जहॉ तक मैंने अध्ययन किया है और मेरी जानकारी है कि भारतीय संगीत को समर्पित कोई नियमित Online Journal उपलब्ध नही है। जैसा कि ज्ञात है कि संगीत के क्षेत्र में संगीत पत्रिकाओं का अभाव है और जो पत्रिकायें संगीत के प्रकाशन का कार्य कर रही हैं उनमें किसी लेख या शोधपत्र को प्रकाशित कराने में एक लम्बा समय लग जाता है। कभी–कभी तो दो से ढाई वर्ष लग जाते हैं। अपने लेख के प्रकाशन के लिए इतने लम्बे समय तक इंतजार करने के कारण लेखक की रचनात्मक क्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है। नई जानकारियां, नये अनुसंधान व नये विचार, जो लेखों के माध्यम से संगीत के पाठकों तक नियमित रूप से कम समय में पहुॅच जाने चाहिए, उसमें विलम्ब होता है। इन सभी समस्याओं का तकनीकी समयानुकूल व आधुनिक समाधान है– Online Journal या E-Journal.

संगीत गैलेक्सी भारतीय संगीत को समर्पित एक Online Journal है, जिसका उद्देश्य संगीत के उच्च स्तरीय शोधपत्रों, लेखों आदि के त्वरित प्रकाशन के लिए एक स्वतंत्र व बौद्धिक मंच प्रदान करना है। यह शोध पत्रिका संगीत के विभिन्न क्षेत्रों, उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत, दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, पाश्चात्य संगीत आदि से संगीत के मौलिक व अप्रकाशित लेख आदि हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में आमंत्रित करती है।

कृतज्ञता ज्ञापन की कड़ी में सबसे पहले हम शुक्रिया अदा करते हैं संगीत कार्यालय हाथरस से प्रकाशित संगीत पत्रिका का, जिसके 'संगीत शोध अंक' में दिये गये शोध विषयों से Music Research Info. का archive तैयार करने में सहायता मिली। उसके लिए साथ ही Editorial Advisory Board के सदस्यों व लेखकों को धन्यवाद देता हूँ जिनके सहयोग से संगीत गैलेक्सी का प्रथम अंक प्रकाशित हो रहा है।

अपने होने का सुबूत और निशां छोड़ गये
हुनरमंद लोग विरासत में क्या–क्या छोड़ गये
सुर–ताल–घुंघरूओं से महफिल सजती रहे
इसलिये विरासत के साथ विकास की राह छोड़ गये

संगीत की विरासत को संजोकर विकास मार्ग पर चलते हुए संगीत गैलेक्सी पत्रिका का प्रथम अंक आपके हाथों में सौंप रहा हूँ।

आपका अपना

डॉ0 अमित कुमार वर्मा